भाजपा के भक्त उससे भी ज़्यादा ख़तरनाक

निनाद वेंगुरलेकर

भाजपा का भक्त अल्पसंख्यकों, राजनीतिक दलों और उन सभी लोगों के खिलाफ, जिनसे वह सहमत नहीं है, अपनी घृणा, असुरक्षा और पूर्वाग्रहों को दिशा देने के लिए बीजेपी का इस्तेमाल करता है। बीजेपी में उसे एक ऐसी आवाज मिली है, जिसे वह पिछले 700 सालों से खोज रहा था।

वह मुसलमानों से नफरत करता है, वह ईसाइयों से नफरत करता है,वह उदारवादियों और बीमारों से नफरत करता है,वह कांग्रेस से नफरत करता है, वह सपा, बसपा, टीएमसी और हर दूसरी पार्टी के नेता से नफरत करता है। उसे अरविंद केजरीवाल से नफरत है। उसे मज़दूर मोर्चा जैसे मीडिया से नफरत है। वह प्रशांत और योगेंद्र यादव से नफरत करता है।

वह धर्म के आधार पर देश के हर अच्छे आदमी के इरादों पर शक करता है। उसका मानना है कि आमिर खान, नसीरुद्दीन शाह, जावेद अख्तर, शाहरुख खान देशद्रोही हैं। जब आमिर की पत्नी ने देश में असुरक्षा महसूस होने को लेकर बयान दिया था, तो उन्होंने इसे राष्ट्रीय मुद्दा बना दिया। लेकिन जब उसे पता चलता है कि अक्षय कुमार 07 साल पहले ही चुपचाप इस देश की नागरिकता छोड़ चुके हैं, तो वह उनके इस निर्णय को सही ठहराता है।

उसे मोदी पर बनाए गए चुटकुले जरा भी पसंद नहीं हैं। वह दिल्ली के मुख्यमंत्री को खुजलीवाल और राहुल गांधी को पप्पू कह सकता है, लेकिन वह कुणाल कामरा को मोदी का मजाक उड़ाते हुए बर्दाश्त नहीं कर सकता। लेकिन नरेंद्र मोदी की बात आते ही सभी तरह के हास-परिहास और चुटकुलों को बंद करना पड़ेगा।

वह अच्छा भला शिक्षित व्यक्ति है, लेकिन जिन लोगों को वह नापसंद करता है, उनके बारे में फेक न्यूज़ साझा करते समय वह अपने दिमाग का कतई इस्तेमाल नहीं करता। उसे इस बात की परवाह नहीं है कि उसके द्वारा साझा किया जा रहा समाचार फर्जी है। वह फिर भी इसे साझा करना चाहता है। वह जितनी अधिक फेक न्यूज शेयर करता है, उसे रात को उतनी ही अच्छी नींद आती है।

वर्ष 2014 में, उसका मानना था कि हिंदू खतरे में हैं। इसलिए उसने मोदी को वोट दिया। पांच साल, 22 राज्यों और 300+ सीटों के बाद, वह अभी भी मानता है कि हिंदू खतरे में है।

यदि उससे पूछा जाये कि आखिर उसे किस बात का डर है, तो वह श्रीलंका में हुए आत्मघाती हमलों की बात करेगा। जब उसे यह बताया जाएगा कि पिछले पांच वर्षों में भारत (कश्मीर को छोड़कर) के किसी भी हिस्से में एक भी आत्मघाती हमला नहीं हुआ है, तो वह विषय को बदल देगा।

वह तर्कदोष ((किसी कठिन प्रश्न या आरोप का सामना होने पर किसी दूसरे मुद्दे को उठा देना या प्रतिआरोप लगाना) का मास्टर है। यदि बीजेपी अपने मूल्यों और सिद्धांतो के खिलाफ कुछ कार्य करती है, तो वह उसके बचाव में तर्कदोषों की एक पूरी सूची के साथ मौजूद रहता है।इस तर्कदोष के लिए अंग्रेजी भाषा में व्हाटाबॉटरी नामक शब्द प्रचलित है।

उसका सामान्य फार्मूला यह है-

- मुस्लिमों ने ऐसा 700 सालों तक किया + नेहरू ने ऐसा 1955 में किया था + कांग्रेस ने 1982 में ऐसा किया था = भाजपा सही है।

- भाजपा हमेशा सही होती है।

वह विरोधाभासों का पुलिंदा है। वह नोटबंदी का समर्थन करते हुए उसे समय की जरूरत बताता है, लेकिन स्वयं नकदी में धड़ल्ले से कारोबार करता रहता है। वह स्कूल और कॉलेज अपने बच्चों के दाखिले के लिए डोनेशन देने में और यातायात के नियमों के उल्लंघन पर ट्रैफिक पुलिस को रिश्वत देने में कोई संकोच नहीं करता है। वह आयकर विभाग को छलने के लिए अपने चार्टर्ड अकाउंटेंट के साथ देर तक माथामच्ची करता है। यहां तक कि वह स्वच्छ भारत अभियान को बढ़ावा देने के लिए बने शौचालय के इस्तेमाल के बजाए बेधड़क सड़क किनारे पेशाब करता है और अपने नाम के आगे धृष्टतापूर्वक चौकीदार लगाता है।

वह देश में बुलेट ट्रेन चलते हुए देखना चाहता है, भले ही वह स्वयं उसमें यात्रा करने योग्य नहीं होगा। वह कांग्रेस के नेता सरदार वल्लभभाई पटेल की दुनिया में सबसे ऊंची प्रतिमा देखाना चाहता है, क्योंकि मोदी ने ऐसा निश्चय किया था। वह उत्तर प्रदेश में भगवान राम की मूर्ति बनवाने का औचित्य साबित करेगा, लेकिन वह मोदी से यह नहीं पूछेगा कि वे पिछले 5 वर्षों में वीर सावरकर की एक भी प्रतिमा क्यों नहीं बना पाए।

उसे राष्ट्रीय ध्वज और राष्ट्रगान बहुत पसंद है। लेकिन उससे गाने को कहा जाये तो वह इसे नहीं गा सकता। वह चाहता है कि मुसलमान वंदे मातरम बोलें, लेकिन वह स्वयं इसके एक भी शब्द का अर्थ नहीं जानता।

वह एक ऐसा हिंदू है, जिसने उपनिषदों को नहीं पढ़ा है। हिंदू धर्म की उनकी समझ व्हाट्सएप संदेशों तक सीमित है। वह सोचता है कि भगवान स्वर्ग में रहते हैं और इसीलिए राम मंदिर का निर्माण आवश्यक है, और केरल के सबरीमाला मंदिर में महिलाओं को प्रवेश देने पर भगवान शाप देंगे।

जो लोग नरेंद्र मोदी का समर्थन करते हैं, वे उसके नायक हैं। उसकी नज़र में, बॉलीवुड में अभिनेताओं और निर्देशकों के राजनीतिक विचार उनके अभिनय/प्रस्तुति से कहीं बढ़कर हैं। अतः विवेक अग्निहोत्री एक रॉकस्टार हैं। वह फिल्म अभिनय क्षेत्र में दिए जाने वाले राष्ट्रीय पुरस्कार हेतु 'दंगल' फिल्म में आमिर खान और 'अलीगढ़' फिल्म में मनोज बाजपेयी के अभिनय के बजाय 'रुस्तम' फिल्म के लिए अक्षय कुमार का समर्थन करता है। वह ग्रैंड मस्ती जैसी फिल्म को भारतीय मूल्यों के खिलाफ मानता है, लेकिन विवेक ओबेरॉय सिर्फ इसलिए उसके नायक बन जाता है, क्योंकि वह नरेंद्र मोदी की बायोपिक में उनका किरदार निभा रहा है।

भाजपा भक्त दिल से अनुयायी होता है। वह औद्योगिक युग का व्यक्ति है। वह इंटरनेट का उपयोग करता है, लेकिन इंटरनेट अर्थव्यवस्था के आधारों से सहमत नहीं है। उसे अनुशासन, आदेश और अनुपालन पसंद है। वह नेतृत्व करना चाहता है। उसे अपने राजनीतिक नायकों के बारे में प्रश्न सुनना पसंद नहीं है। लेकिन जिनसे वह नफरत करता है, उनसे हर समय कटघरे में खड़ा रखना चाहता है।

उसे वादविवाद करना पसंद नहीं है। वह जानता है कि उसके नायक गलत हैं। लेकिन वह उनकी गलतियों को सही ठहराता रहता है। जब वादविवाद में उसका पलड़ा हल्का पड़ने लगता है तो वह अपशब्दों का इस्तेमाल करने लगता है। वह व्यक्तिगत हो जाता है। वह नाम लेकर संबोधित करने लगता है।

वह कट्टरपंथी हिंदुओं द्वारा धर्म के नाम पर किए गए अपराधों के खिलाफ कुछ नहीं बोलना चाहता हैं। वह यह देख कर खुश है कि दुनिया भर में आई.एस.आई.एस. द्वारा किए जा रहे पापों का खामियाजा भारत के निर्दोष मुसलमानों को उठाना पड़ रहा है। वह इस बात के लिए मुस्लिम समुदाय को कोई धन्यवाद नहीं देना चाहेगा कि पिछले 5 वर्षों में बारंबार गरियाये जाने के बावजूद उन्होंने गरिमापूर्ण आचरण किया है।

वह भाजपा से ज्यादा सांप्रदायिक हैं। वह भाजपा से ज्यादा खतरनाक हैं। उसे लगता है कि वह बहुमत में हैं क्योंकि भाजपा के पास संसद में 300+ सीटें हैं। वह संवैधानिक मूल्यों की कोई परवाह नहीं है। वह भाजपा द्वारा तैयार किया गया एक दैत्य है। उसकी नफरत भाजपा के विकास के एजेंडे को लील जाएगी। मुझे उम्मीद है कि कभी न कभी ये होकर रहेगा, ताकि नरेंद्र मोदी उस बात पर ध्यान केंद्रित कर सकें जिसके लिए उन्हें वोट दिया गया था।"

आत्मनिर्भर भारत: चली गई 86 लाख नौकरियाँ

आवेश तिवारी

देखिए यह इस देश के प्रधानमंत्री हैं। इस साल फरवरी-अप्रैल के दौरान, वेतनभोगी कर्मचारियों को 86 लाख नौकरी का नुकसान हुआ।अकेले अप्रैल में वेतनभोगी कर्मचारियों को 34 लाख नौकरियों के नुकसान का सामना करना पड़ा। यह कहता है कि आत्मनिर्भर भारत का सपना है ।

सोचिए यह देश का प्रधानमंत्री है। लगभग 55त्न लोगों की कमाई पिछले साल की तुलना में कम हुई है और बाकी के लोगों ने यह कहा

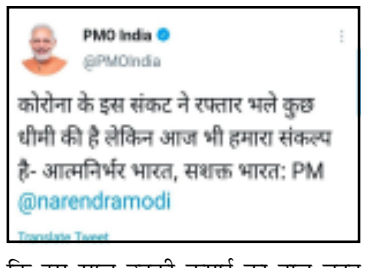

कि इस साल उनकी कमाई का हाल बहुत बुरा है। एक साल पहले लोगों की कमाई की तुलना में भारत के 97त्न से ज़्यादा लोग गरीब हुए हैं।यह कहता है कि आत्मनिर्भर भारत का सपना है ।

सोचिये यह देश का प्रधानमंत्री है।देश भर में अप्रैल-मई 2020 के लॉकडाउन के दौरान लगभग 10.0 करोड़ लोगों ने नौकरी खो दी. हालांकि कई लोग जून 2020 तक काम में शामिल हो गए, 2020 के अंत तक भी लगभग 1.5 करोड़ कर्मचारी काम से बाहर रहे।यह कहता है कि आत्मनिर्भर भारत का सपना है ।

सारा कैश किसकी जेब में जा रहा है ?

गिरीश मालवीय

कहा जा रहा है कि हमे इकनॉमी में डिमांड बढ़ाने के लिए और नोट छापने होंगे लेकिन हमने यदि ओर करंसी नोट छापे तो हमे जिम्बावे बनने से कोई रोक नही सकता ! जहाँ लोग सूटकेस भर के नोट ले जाते हैं और थैली भर कर सब्जी खरीदकर लाते थे

देश के आम आदमी को अब बड़े बड़े करंसी नोट देखने को भी नही मिल रहे हैं लेकिन आश्चर्यजनक रूप से त्रक्षह्ल के रिकॉर्ड के अनुसार नकदी यानी करंसी नोट का चलन बेतहाशा बढ़ गया है !

एक दिन यह देश का सबसे बड़ा घोटाला साबित होगा.....

आपको याद है न !.....नोटबन्दी के पहले हर आदमी के जेब मे अच्छा खासा कैश रहता था, वह राजा की तरह बाजार में जाता और झटके से हजारों के मोबाइल खरीद लेता अन्य कोई इलेक्ट्रॉनिक आइटम खरीद लेता .....लेकिन जैसे ही नोटबन्दी हुई लोगो की जेब से कैश गायब होने लगा

नोटबन्दी करने का जो सबसे पहला कारण बताया गया वह था कैश बबल,.....अनिल बोकिल टाइप के अंधभक्त अनर्थशास्त्रियों ने बताया था भारतीय अर्थव्यवस्था में नगदी यानी करंसी नोट बहुत ज्यादा हैं सरकार के पिट्ठू बने अर्थशास्त्री यह बता रहे थे कि नोटबन्दी के पहले बड़ी संख्या में करंसी सर्कुलेशन में आ गयी थी जिसे रोका जाना जरूरी था .....

आप जानते हैं कि 2016 में नोटबंदी के समय देश की अर्थव्यवस्था में नकदी कितनी थी ? आरबीआई के मुताबिक, उस वक्त 17.97 लाख करोड़ रुपये नकद रूप से चलन में था यानी करंसी नोटो की शक्ल में ! .....

लेकिन आप हैरान हो जाएंगे जब आज की स्थिति जानेंगे !.....

आरबीआई द्वारा दी गयी जानकारी के अनुसार मार्च, 2021 तक भारतीय अर्थव्यवस्था में नकदी का चलन बढ़कर 28.6 लाख करोड़ रुपये तक पहुंच गया हैं

यानी आप खुद सोचिए कि आजादी के 67 सालो में कुल मुद्रा का चलन था लगभग 18 लाख करोड़ रुपये !....ओर मात्र साढ़े तीन साल में लगभग 10 लाख करोड़ रुपये की मुद्रा छाप दी गयी !..... सबसे बड़ी बात तो यह कि यह मुद्रा आखिर गयी कहा ? क्योकि नोटबन्दी के पहले तो हमे यह मुद्रा आम आदमी के हाथों में दिखती थी !.....

2016 को की गई नोटबंदी का बड़ा उद्देश्य नकदी के इस्तेमाल में कमी लाना बताया गया था तो आज अगर कैश इतना अधिक बढ़ा है तो कहा गयी आपकी कैशलेस/ लेसकैश इकनॉमी ?.....

नकदी का चलन में बढ़ोतरी पिछले वित्त वर्ष में बेतहाशा रूप से बढ़ी है यह पिछले साल के मुकाबले 16.8 फीसदी अधिक है। 2010-11 के बाद का सबसे बड़ा उछाल है।कोरोना महामारी की दूसरी लहर के बीच लगातार दूसरे महीने डिजिटल लेनदेन में भी गिरावट आई है।

अब बताइये कहा गए %कैश बब्बल% की बात करने वाले अर्थशास्त्री ?

अब ऐसी सिचुएशन मे जहाँ आप साढ़े तीन साल में 10 लाख करोड़ के करंसी नोट छापकर बाजार में डाल चुके है तो आप कैसे ओर नोट छापेंगे ! ओर जो नोट छापे गए वो आखिर गए कहा ?

बढ़ती महंगाई बता रही है कि देश जल्द ही उपरोक्त स्थिति वाला जिम्बाब्वे बनने वाला है सच्चाई यह है कि इस आदमी ने देश को बर्बाद कर दिया है।

क्यों बढ़ रहे हैं खाद्य तेलों के दाम!

आर के जैन

आजकल खाद्य तेलों के दाम विशेषत सरसों के तेल के दामों में भारी तेज़ी देखी जा रही है । एक रिपोर्ट के अनुसार पिछले वर्ष की तुलना में खाद्य तेलों के दाम 50त्न तक बढ़ गये है। उत्तर और पूर्वी भारत में सरसों का तेल ही ज़्यादा खाया जाता है ।

हमारे देश में खाद्य तेलों की खपत प्रति वर्ष लगभग 220 लाख टन है जबकि हमारे यहाँ इसका उत्पादन 70-80 लाख टन ही है । ज़ाहिर है कि हम अपनी जरूरत का लगभग दो तिहाई खाद्य तेल आयात करते है । हम प्रति वर्ष लगभग 150 लाख टन खाद्य तेल आयात करते है ।

वर्ष 2020-21 के नवंबर माह से हम खाद्य तेलों का आयात कम कर रहे है । माह फ़रवरी में ही गत वर्ष की तुलना में लगभग 25त्न खाद्य तेल का आयात कम हुआ है और नवंबर से फ़रवरी तक की अवधि में गत वर्ष के सापेक्ष लगभग 4त्न खाद्य तेलों का आयात कम हुआ है ।

खाद्य तेलों का हमारा घरेलू उत्पादन लगभग स्थिर है जबकि खपत में प्रति वर्ष लगभग 4-5 प्रतिशत वृद्धि हो रही है । वर्तमान समय में खाद्य तेलों के मूल्यों में वृद्धि का कारण सिर्फ़ तेलों के आयात का कम होना है । सरकार तेलों के आयात में क्यों कटौती कर रही है यह तो स्पष्ट नहीं है पर यदि किसानों को तिलहन के ऊँचे दाम मिल सके के कारण आयात कम किया जा रहा है तो बात अलग है । किसानों को उनकी फसलों का उचित मूल्य मिल सके इससे कोई इनकार नहीं कर सकता पर यदि जमाख़ोरों ने कोई खेल खेला है तो यह एक गंभीर बात है जिसपर सरकार को कार्रवाई करने की ज़रूरत है। खाद्य तेल आवश्यक वस्तुओं में शुमार होता है तो यह भी सरकार को सुनिश्चित करना होगा की खाद्य तेलों की उपलब्धता नागरिकों को उचित मूल्यों पर हो सके भले ही इसका आयात क्यों न बढ़ाना पड़े।

गलत फोटो लगने पर हमें खेद है

मजदूर मोर्चा के पिछले अंक (30 मई-5 जून) में आईपीएस वाई पूर्ण कुमार से संबंधित खबर में गलती से फरीदाबाद के पूर्व पुलिस कमिश्नर डॉ. हनीफ कुरैशी का फोटो प्रकाशित हो गया था। इस गलती पर हमें खेद है। उनके सम्मान को किसी भी प्रकार का ठेस पहुंचाने का हमारा इरादा नहीं था।

-सम्पादक